NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX-A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581-4230
VOLUME 5, ISSUE 5, May -2019

Dr. Lajvanti
Dept. of Hindi
Govt. College Kosli, Haryana

भाषाविज्ञान का अर्थ, स्वरूप एवं शाखाएँः एक अध्ययन

Abstract

भाषाविज्ञान शब्द दो शब्दों के मेल से बना है– भाषा और विज्ञान। इसका अर्थ है भाषा का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं और दूसरों के विचार समझ सकते हैं। यह मौखिक या लिखित रूप में हो सकती है। इसके बोलने के लिए जिह्वा, मुख, श्वासेन्द्रियों तथा लिखने के लिए लिपि चिह्नों की आवश्यकता होती है। भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित, यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज–विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। विज्ञान का अर्थ होता है विशिष्ट ज्ञान। अतः भाषा विज्ञान का अर्थ है जो भाषा का विशिष्ट ज्ञान कराए उसे भाषाविज्ञान कहते हैं। यह निश्चित ज्ञान क्या है इसी विषय पर इस अध्याय में विचार किया जाएगा।

Introduction

वर्तमान भाषाविज्ञान का प्रारम्भ सन् 1786 में सर विलियम जोंस के संस्कृत, लैटिन और ग्रीक के तुलनात्मक अध्ययन से प्रारम्भ हुआ। तुलनात्मक अध्ययन होने के कारण इसे कम्पेरेटिव ग्रामर (Comparative Grammar) नाम दिया गया। इस नाम को अधिक शुद्ध न मानकर इसका नाम कम्पेरेटिव फिलोलोजी (Comparative Filology) कर दिया गया। भाषाविज्ञान

सदा ही तुलनात्मक होता है इसलिए Comparative को व्यर्थ माना गया और इसका नाम Filology कर दिया गया। सन् 1817 में डेवीज़ ने इसका नाम XyklkWyksth (Glosslogy) रख दिया। परन्तु यह नाम भी अधिक देर तक नहीं चल सका। सन् 1841 में प्रिटर्ड ने भाषाविज्ञान का नाम ग्लाटॉलोजी (Glottology) रखा परन्तु इसे भी मान्यता नहीं मिली।

कई देशों में इसके लिए Filology शब्द ही चलता रहा। यह मूल रूप से यूनानी शब्द Philos (प्यार या प्रेमी) तथा Logos (बातचीत, शब्द या भाषा) से बना है जिसका विकसित होकर अर्थ बना– 'वह ज्ञान जो क्लासीकल भाषाओं जैसे ग्रीक और लैटिन आदि को समझने में सहायता दे।'

अंग्रेजी में इसके लिए Science of Language नाम चला, परन्तु यह अपनी लंबाई के कारण नाम जैसा नहीं लगता। इसलिए आजकल इसका नाम Linguistics चल पड़ा है। यह शब्द लैटिन भाषा के स्पदहनं से बना है, जिसका अर्थ है जीभ। मूलतः भाषाविज्ञान के अर्थ में यह शब्द फ्रांस से चला।

भारत में पहले भाषाविज्ञान जैसा शब्द तो नहीं था परन्तु इसके अर्थों में प्राचीनकाल में निर्वचन शास्त्र, शब्द शास्त्र, भाषा तत्त्व, शब्द तत्त्व, भाषालोचन तथा भाषिकी आदि शब्द हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयोग होते रहे हैं। वर्तमान समय में इस अर्थ में तुलनात्मक भाषाविज्ञान, भाषाविज्ञान, शब्दशास्त्र, भाषाशास्त्र, तुलनात्मक भाषाशास्त्र, भाषिकी आदि शब्द प्रचलित हैं। इन सबमें से भाषाविज्ञान शब्द सबसे अधिक प्रचलित हो चुका है।
भाषा के सभी अंगों (ध्वनि, पद, वाक्य, अर्थ) का ऐतिहासिक तुलनात्मक या प्रायोगिक ढंग से वैज्ञानिक दृष्टि का विश्लेषण और विवेचन करना तथा निष्कर्ष निकालना भाषाविज्ञान कहलाता है।

भाषाविज्ञान भाषा का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन करता है।

व्यवस्थित अध्ययन का अर्थ है तर्क के आधार पर सूक्ष्म एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन करना। यह भाषा के विभिन्न घटकों– ध्वनि, पद वाक्य और अर्थ का अलग–अलग अध्ययन करता है तथा निष्कर्ष निकालता है। यह इन घटकों के पारस्परिक संबंधों का भी अध्ययन करता है। भाषा में समय के साथ–साथ परिवर्तन होता रहता हैं। भाषाविज्ञान इन परिवर्तनों का अध्ययन करके उसके कारणों की खोज भी करता है। यह भाषा के उद्‌गम एवं विकास पर सम्यक् दृष्टि डालकर भाषा को प्रभावित करने वाले तत्त्वों का अध्ययन भी करता है। यह भाषा की आंतरिक व्यवस्था का वैज्ञानिक विश्लेषण कर तर्कपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। यह भाषा के प्रयोग और विकास से संबंधित नियम निर्धारित कर उसके अंतर्गत आने वाली बोलियों से उसका संबंध भी स्थापित करता है। यह भाषा का अन्य भाषाओं से तुलनात्मक अध्ययन करके उनमें साम्य और वैषम्य का विवेचन करता है।

भाषाविज्ञान का क्षेत्र बहुत विशाल है। यह मानव के वागंगों से उच्चरित सभी भाषाओं एवं बोलियों का अध्ययन करता है। यह आदिवासियों की तथा अन्य असभ्य, अर्द्धसभ्य एवं ग्रामीण लोगों की बोलियों का अध्ययन भी करता है। भले ही वह भाषा साहित्यिक दृष्टि से अपना महत्त्व न रखती हो फिर भी भाषाविज्ञान में उसका अध्ययन उतने ही वैज्ञानिक एवं सूक्ष्म ढंग से किया जाता है। परन्तु, मानव वागंगों के अतिरिक्त पशु–पक्षियों की बोलियों तथा अन्य ध्वनियों का अध्यययन इसमें नहीं किया जाता।

भाषाविज्ञान में वर्तमान एवं अतीत की भाषाओं का अध्ययन भी किया जाता है। यह भाषा की प्रकृति का सम्यक् अध्ययन करता है जिसके लिए इसे अन्य विज्ञानों का सहयोग लेना पड़ता है।

भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला, इस प्रश्न पर विचार करने से पहले कला और विज्ञान के अंतर को समझ लेना आवश्यक है। कला भावना और कल्पना से जन्म लेती है। एक दृश्य का हर कलाकार अलग अर्थ लेता है

और अलग रचना करता है। कलाकार एक वस्तु को समग्र रूप में देखकर उसका संश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। कला में एक रसात्मक अनुभूति होती है जो प्रत्येक व्यक्ति पर अलग प्रभाव डालती है। दूसरी तरफ विज्ञान तथ्य एवं तर्क से जन्म लेता है। उसके निष्कर्ष स्थायी एवं सार्वभौमिक होते हैं। उसकी दृष्टि प्रयोगात्मक होती है। वैज्ञानिक अनुसंधान शुष्क एवं नीरस होते हैं, ये हृदय की नहीं बल्कि बुद्धि की उपज होते हैं। इन प्रयोगों को कोई भी व्यक्ति करे, वह उसी निष्कर्ष पर पहुँचता है। इस प्रकार से विज्ञान विश्लेषणात्मक पद्वति पर आधारित होता है।

भाषाविज्ञान कला की तरह कल्पना से उत्पन्न नहीं होता। यह मनुष्य की बुद्धि की उपज है। यह विज्ञान की तरह की भाषा को खण्ड–खण्ड करके विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। इसके निर्णय भले ही भौतिक विज्ञान के बराबर सार्वभौमिक न होते हों फिर भी अपनी वस्तुनिष्ठ दृष्टि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन के कारण इसे विज्ञान की कोटि में ही रखा जाना चाहिए।

भाषाविज्ञान के निर्णय भौतिक विज्ञान की तरह सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं विकल्परहित नहीं होते। इसलिए यह प्रश्न भी हो सकता है कि भाषाविज्ञान किस सीमा तक विज्ञान है। यह ठीक है कि भौतिक, गणित या रसायन जिस सीमा तक विज्ञान हैं उस सीमा तक भाषाविज्ञान नहीं। परन्तु इसे राजनीति, विज्ञान, समाजविज्ञान और मनोविज्ञान की कोटि में रखा जा सकता है।

भाषाविज्ञान भाषा का सर्वांगीण अध्ययन करता है। इसलिए इसमें भाषा के सभी तत्त्वों का विवेचन होता है। भाषा में चार तत्त्व मुख्य रूप से पाए जाते हैं– ध्वनि, पद, वाक्य और अर्थ। मानव के मुख से निकली ध्वनियों से भाषा का निर्माण होता है। ये ध्वनियाँ मिलकर शब्द बनाती हैं जो वाक्य में प्रयुक्त होकर पद कहलाते हैं तथा वाक्य से अर्थ की प्रतीति होती है। अतः

भाषाविज्ञान के भी चार प्रमुख अंग माने जाते हैं–

भाषाविज्ञान में मानव मुख से उच्चरित ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत ध्वनि निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन होता है। ध्वनि कहाँ से उत्पन्न होती है, उसका संवहन कैसे होता है तथा उसका श्रवण कैसे होता है? इसमें ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ तथा ध्वनि परिवर्तन के कारणों का अध्ययन भी किया जाता है। ध्वनि के नियम तथा बलाघात और अनुतान का अध्ययन भी किया जाता है। इसमें विभिन्न भाषाओं की ध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन अथवा एक भाषा की ध्वनियों का दो कालखण्डों में तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाता है।

अनेक ध्वनियों को जोड़कर शब्द बनता है। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तथा अन्य शब्दों से संबंध स्थापित कर लेता है तो उसे पद कहते हैं। पद को रूप को भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे Morph कहते हैं। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह लिंग, वचन आदि व्याकरणिक कोटियों के अनुसार रूप धारण करता है।

पदविज्ञान के अंतर्गत पद या रूप की रचना, प्रकार, घटक, अवयव तथा शब्द से रूप बनने की प्रक्रिया का विवेचन किया जाता है। इसके साथ–साथ लिंग, वचन, काल, पुरुष, प्रकृति, प्रत्यय और उपसर्ग आदि तत्त्वों की परिभाषा और उपयोगिता का वर्णन भी किया जाता है। शब्द और पद में अंतर, पद निर्माण के प्रकार इत्यादि विषयों का विवेचन किया जाता है।

जिस प्रकार से विभिन्न ध्वनियों को जोड़कर पद की रचना की जाती है उसी प्रकार से विभिन्न पदों को जोड़कर वाक्य की रचना की जाती है। वाक्य विज्ञान को अंग्रेजी में Syntax कहते हैं। इसमें वाक्य की परिभाषा भेद निकटस्थ अवयव तथा गठन प्रक्रिया का विवेचन किया जाता है। इसमें वाक्य परिवर्तन के कारण तथा वाक्य की संरचना आदि पर वैज्ञानिक दृष्टि से

अध्ययन किया जाता है।

वाक्य विज्ञान को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

(क) वर्णनात्मक वाक्य विज्ञानः इसमें वाक्य रचना का व्याकरणिक दृष्टि से अध्ययन किया जाता है।

(ख) ऐतिहासिक वाक्य विज्ञानः इसमें वाक्य रचना का इतिहास दिया जाता है तथा काल–क्रमानुसार वाक्य में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।

(ग) तुलनात्मक वाक्य विज्ञानः इसमें दो या अनेक भाषाओं के वाक्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

अर्थ को प्रकट करना ही भाषा का मुख्य उद्देश्य है। इसलिए अर्थ को भाषा की आत्मा भी कहा जाता है। अर्थ का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करना अर्थविज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। अर्थ क्या होता है, शब्द का अर्थ से क्या संबंध है, वक्ता जिन शब्दों को बोलता है श्रोता उसे कैसे अर्थ के रूप में ग्रहण करता है, अर्थ परिवर्तन कैसे और क्यों होता है, अर्थ–परिवर्तन की दिशाएँए कौन–सी हैं आदि बातों पर विचार किया जाता है।

भाषा के अन्य सभी तत्त्व ध्वनि, पद, वाक्य अर्थ से संबंधित रहते हैं। अतः अर्थविज्ञान में इन तत्त्वों का अर्थ से संबंध स्थापित किया जाता है। अर्थ विज्ञान का भी समकालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

(1) अम्बा प्रसाद सुमन, भाषाविज्ञान सिद्धांत और प्रयोग, सस्ता साहित्य भण्डार, दिल्ली, संस्करण–1982

(2) अयोध्या प्रसाद गोयलीय, शेर–ओ–शायरी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई

दिल्ली, प्रथम संस्करण–1999

(3) अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध", बोलचाल, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, द्वितीय संस्करण–संवत् 2011

(4) डॉ. अशोक के.शाह 'प्रतीक', हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान, अमर प्रकाशन, मथुरा, प्रथम संस्करण–2008

(5) उदयनारायण तिवारी, हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास, भारतीय भण्डार, संस्करण–संवत् 2012

(6) उमेशचन्द्र शुक्ल, हिन्दी व्याकरण, वाणी, प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2000

(7) कपिल देव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–1991

(8) कमलकांत मिश्र, अर्थविज्ञान, नाग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1988

(9) कामता प्रसाद गुरू, हिन्दी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, छठा संस्करण–संवत् 2012

(10) किशोरीदास वाजपेयी, हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संस्करण–संवत् 2012